Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.7282, Volume 09, No. 01, January, 2019, pp. 241-243

Hkkjr esa Hkwe.Myhdj.k vkSj mPprj f'k{kk

प्रो. बनवारी लाल जैन*
डॉ. अमिता जैन**

lkjka'k

सभी व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्ति के ज्ञान को बढ़ाते है। अब विश्वविद्यालय ही ज्ञान के एक मात्र भंडार नहीं रह गये हैं। नए ज्ञान के संरक्षण, प्रसारण और सृजन पर उनका एकाधिकार खत्म हो चुका है। ज्ञान और दक्षता अर्जित करने को अब अनवरत प्रक्रिया या आजीवन सीख माना जाने लगा है और इसी कारण औपचारिक शिक्षा से रोजगार संबंधित प्रशिक्षण की ओर तथा इसके विपरीत बार–बार परिवर्तन किया जाना आवश्यक हो गया है। भविष्य में सफलता उन्हीं के हाथों में होगी जिनके पास 21 वीं सदी की उच्च स्तरीय दक्षता होगी और अंतर–विषयक समूहों में कार्य करने की योग्यता होगी। चूँकि परिवर्तन की रफ्तार तीव्र है, प्रतिस्पर्धा में बढ़त बनाने के लिए आधुनिकतम ज्ञान और तकनीकी दक्षता रखना आवश्यक हो गया है।

eq[; 'kCn: *उच्चतर शिक्षा, भूमंडलीकरण, व्यावसायीकरण, प्रशिक्षण, रोजगारोन्मुखी दक्षता।*

———————————

izLrkouk

आज उच्चतर शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य अपने छात्रों को सामाजिक नेतृत्व, नागरिक जिम्मेदारी और राजनीतिक आलोचना के लिए तैयार करने से बदलकर उन्हें तुरंत ही रोजगार के लिए तैयार करने का हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि उच्चतर शिक्षा का ध्यान अब 'रोजगार के योग्य' से 'रोजगार की ओर' तथा 'ज्ञान' से 'सूचना' की ओर और 'सामान्य शिक्षा और जागरूकता' से हटकर 'रोजगारोन्मुखी दक्षता और तकनीक' की ओर चला गया है।जैसे ही हम भूमंडलीकरण के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं और वह भी तीव्र गति के साथ तो हमें बदलाव मिलना अवश्यंभावी है। हम अपने रहने, सीखने, कार्य करने और कार्य के विषय में सोचने के दृष्टिकोण में बदलाव पाते हैं। ऐसा लगता है कि जाने–अनजाने में बाजार का सिद्वांत और उसकी शब्दावली हमारे विचारों और गतिविधियों पर हावी हो गई है।कई छात्र और उसके परिवार वाले सोचते हैं कि उच्चतर शिक्षा सीखने के लिए नहीं है बल्कि बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए है। वे अपने मनपसंद विषयों को छोड़ उन पाठ्यक्रमों की तरफ भागते हैं जिससे नौकरियाँ मजबूत हो सके।

शिक्षण से जुड़े अनेक लोग भी अपने शोध द्वारा सत्य की खोज करने में कम दिलचस्पी रखते हैं। वे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपने हितों की पूर्ति करके व्यक्तिगत लाभ उठाने में अधिक रूचि रखते हैं। सजग शोधकर्ताओं या समर्पित शिक्षकों या योग्य प्रशासकों की तुलना में उन लोगों को प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में रोजगार मिलने की संभावना अधिक होती है जो राजनीति में प्रभावशाली लोगों के साथ संबंध बनाकर वित्त की व्यवस्था कर सकते हैं। समानता पहुँच और सामाजिक जिम्मेदारी की तुलना में आर्थिक दक्षता और बाजार की अनुकूलता पर अधिक बल दिया जाता है। ऐसा महसूस होता है कि

* विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान।
** शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान।

विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों का कार्य भी अब सामाजिक नेता और राजनीतिक आलोचक तैयार करने के स्थान पर लगातार बदलती बाजार की आवश्यकताओं के लिए मानव संसाधन तैयार करना हो गया है।इसमें आश्चर्य नहीं कि आज हम उच्चतर शिक्षा का व्यावसायीकरण की तरफ झुकाव देख रहे हैं। इसका अर्थ सिर्फ व्यावसयिक शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण पर जोर देना ही नहीं बल्कि लोगों के हितों की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालयों में शोध करना भी है।

उच्चतर शिक्षा के व्यावसायिकरण पर बल दिया जाना कोई नई बात नहीं है। यह स्थिति भूमंडलीकरण से पहले भी विद्यमान थी। लेकिन जहां उच्चतर शिक्षा के व्यावसायीकरण पर वर्तमान बल दिया जाना राजनीतिक और आर्थिक नेतृत्व के निहित स्वार्थ के लिए प्रतीत होता है वहाँ उच्चतर शिक्षा के व्यावसायीकरण के पीछे मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यावसायिक और सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना प्रतीत होता था।व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा पर वर्तमान कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सामान्य दक्षताओं से युक्त करना है, जो भविष्य में उनके रोजगार की संभावनाओं को बेहतर बनाने का साधन बन सके।छात्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अपनी इच्छा के विषयों या सामाजिक गतिशीलता की आवश्कताओं का अध्यवसाय अपनी पूरी क्षमता से करें। उनकी पसंद और नापसंद, मानसिक और शारीरिक क्षमता और व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए, उन्हें स्वयं विषय का चुनाव करने की छूट दी जानी चाहिए।सच ही कहा गया है कि सभी व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्ति के ज्ञान को बढ़ाते है।

अब विश्वविद्यालय ही ज्ञान के एक मात्र भंडार नहीं रह गये हैं। नए ज्ञान के संरक्षण, प्रसारण और सृजन पर उनका एकाधिकार खत्म हो चुका है। ज्ञान और दक्षता अर्जित करने को अब अनवरत प्रक्रिया या आजीवन सीख माना जाने लगा है और इसी कारण औपचारिक शिक्षा से रोजगार संबंधित प्रशिक्षण की ओर तथा इसके विपरीत बार–बार परिवर्तन किया जाना आवश्यक हो गया है। भविष्य में सफलता उन्हीं के हाथों में होगी जिनके पास 21 वीं सदी की उच्च स्तरीय दक्षता होगी और अंतर–विषयक समूहों में कार्य करने की योग्यता होगी। चूँकि परिवर्तन की रफ्तार तीव्र है, प्रतिस्पर्धा में बढ़त बनाने के लिए आधुनिकतम ज्ञान और तकनीकी दक्षता रखना आवश्यक हो गया है। स्वामी विवेकानंद जी ने बहुत पहले यह कहा था कि 'भारत जाग रहा है' लेकिन भारत को जीवन के हर क्षेत्र में हासिल की गई अपनी उपलब्धियों और अपार क्षमता के साथ विश्व के मानचित्र पर अपनी पहचान स्थापित करने में 100 वर्षों से भी अधिक का समय लगा।

भारत ने अनेक प्रकार की समस्याओं और बाधाओं के रहते हुए भी आगे बढ़ते रहने के अपने संकल्प के कारण राजनीतिक और आर्थिक पणधारकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।भारत में आज उच्चतर शिक्षा असमंजस की स्थिति में है। तार्किकता और वैज्ञानिक मनोवृत्ति की ब्रितानी विरासत के रूप में, दान के तौर पर मिली शिक्षा की परम्परा को नैसर्गिक रूप में ग्रहण करने के पश्चात् यह एक ओर तो सांस्कृतिक विरासत के सरंक्षण तथा दूसरी ओर अमेरिकी प्रभाव के अधीन व्यावसायीकरण और बाजारीकरण के लिए प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाने का कड़ा प्रयास कर रही है। स्वतंत्रता से पूर्व अनेक लोकोपकारी लोगों, धार्मिक प्रवृति के व्यक्तियों और संस्थाओं ने आध्यात्मिकता, आत्मसम्मान और समग्रता को प्रोत्साहन देने के लिए उच्चतर शिक्षा के केन्द्र स्थापित किए। स्वतंत्रता के बाद भी भारत में उच्चतर शिक्षा को बढ़ावा देने में निजी क्षेत्र ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विश्वविद्यालयों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों का काम सिर्फ रोजगार में प्रवेश के लिए सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या डिग्री प्रदान करना मात्र नहीं है। उनका सच्चा काम विवेक का पोषण करना है, जिससे कि उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने वाले, 'अच्छा जीवन और जीवन की अच्छाई', 'जरूरत और इच्छा', 'आर्थिक विकास' और 'सर्वांगीण विकास' के बीच अंतर समझ सके। हमें आगे बढ़ने के लिए सिर्फ दृढ होने की ही आवश्यकता नहीं है, बल्कि लचीलापन और अनुकूलन की भी आवश्यकता है। हमें अपने और दूसरों के अनुभवों से सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। सभी सृजनात्मक, अनूठे और नवीन विचारों का स्वागत किया जाना चाहिए। विचार विकसित करने वालों की तुलना में स्वयं विचारों को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।भारत में सार्वजनिक विश्वविद्यालयों

में उच्चतर शिक्षा के इच्छुकों की संख्या बहुत अधिक हो सकती है, लेकिन फिर भी, बीच में ही छोड़ जाने वालों की संख्या काफी अधिक है। सभी को बराबरी के आधार पर आम और उदारवादी शिक्षा देने के बजाय पाठ्यक्रम को बहुमुखी, छात्र–केन्द्रित और बाजार उपयोगी बनाना अधिक तर्कसंगत लगता है।

पेशेवर शिक्षा को गंभीरता से लेना चाहिए। छात्रों को इसका चुनाव इच्छा के अनुसार करना चाहिए, न कि इसलिए कि वह मूल धारा में शामिल नहीं हो पाया है। हर छात्र को शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक सलाहकारों से परामर्श करने का अवसर मिलना चाहिए, जिससे कि वे स्कूल स्तर पर विषय का उचित चयन कर सकें। अगर हम अनुसूचित – जाति, अनुसूचित–जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग के छात्रों का इंजीनियरिंग और मेडिकल में प्रवेश करा दे, तो इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि उनमें से अधिकांश बीच में ही पढ़ाई नहीं छोड़ देगें। उच्चतर शिक्षा उच्चतर ही रहनी चाहिए। इसे बाजारू और तुरंत पाने योग्य नहीं होने देना चाहिए। इसलिए भारत में उच्चतर शिक्षा खासकर पेशेवर प्रशिक्षण की पुनः विस्तृत जाँच करने की आवश्यकता के साथ ही समाधान भी तलाशने की आवश्यकता है। जैसे रहन सहन पर बढ़ते खर्च को नजर में रखते हुए सार्वजनिक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षण फीस में वृद्धि की जानी चाहिए। अगर कोई परिवार बिजली, टेलीफोन, यातायात आदि पर हजारों खर्च कर सकता है, तो वह अपने बच्चों की पढाई पर हो रहे खर्च का 50 प्रतिशत क्यों नहीं खर्च कर सकता है। अगर वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के निजी स्कूलों में शिक्षा देते, प्राइवेट यातायात, शिक्षण फीस आदि पर बड़ी राशि खर्च कर सकते हैं, तो कॉलेज और विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक व प्रशिक्षण शिक्षा पर उतनी ही राशि खर्च क्यों नही कर सकते हैं।

fu"d"k

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस भूमंडलीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था के युग में आर्थिक और दूसरी तरह के प्रोत्साहन से बेहतर नतीजे निकल सकते है न कि कठोर नियंत्रण प्रणाली द्वारा। विशिष्ट तरह के कुछ संस्थानों की स्थापना कर और उचित प्रोत्साहन व्यवस्था के माध्यम सें समर्थित शिक्षकों का समूह तैयार कर जिम्मेदारी से भागने वालों को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है। स्वायत्त या बाहरी इकाइयों द्वारा, सभी सार्वजनिक और निजी संस्थानों का जरूरी मूल्यांकन और प्रत्यायन किया जाना चाहिए। निःसंदेह इस प्रकार उच्चतर शिक्षा की भारत तथा विदेशों में प्रसिद्वि भी बढ जाएगी।

lanHk xzUFk lph

- गुप्ता, आशा (2011). उच्चतर शिक्षाके बदलते अयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय
- पाण्डेय, रामशकल (2008), उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- शर्मा, ओ. पी., गुप्ता शोभा (2008), उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- पाठक, पी. डी. (2008), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- पाठक एवं त्यागी (2008), शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- बघेला, एच. एस. (2007), शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर
- सिन्हा, मंजरी, सिन्धु, आई. एस. (2007), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका,विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

♦❐♦